Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.712
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2602S02V14P003

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Feb'26
Issue–II(II), Volume–XIV

डॉ. विवेकी राय के निबंध :एक विवेचन

डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
(अध्यक्ष हिंदी विभाग)
डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज कोलाड, रायगड
महाराष्ट्र पिन - 402304
मो - 9766731470
Email -sureshamalpure05@gmail.com

सारांश :-

स्वातंत्र्योत्तर युग में निबंधों का विषय वैविध्य तथा भाषाशैली की दृष्टि से बहुमुखी विस्तार हुआ है। पश्चिम की विभिन्न विचारधाराओं-मार्क्सवाद, समाजवाद तथा ज्ञान-विज्ञान के विकास के कारण इन निबंधों में जीवन के विविध आयामों राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म आदि पर नवीन दृष्टि से किया गया है चिंतन- मनन लक्षित होता है। भाषा और शैली के स्तर पर भी इस युग के निबंधों में अन्य गद्य विधाओं-कहानी, उपन्यास, संस्मरण, गद्य काव्य, यात्रा वृत्तांत, रेखाचित्र, डायरी, रिपोतार्ज आदि का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि हजारीप्रसाद द्विवेदीके निबंध हैं जिन्होंने आ. रामचंद्र शुक्ल के पश्चात हिन्दी निबंध साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की है। इस कालखंड में तीन पीढ़ियों के लेखक एक साथ निबंध लेखन में संलग्न हैं- रामवृक्ष बेनीपुरी, जैनेंद्र कुमार, श्रीमती महादेवी वर्मा, रामनारायण उपाध्याय, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', देवेन्द्र सत्यार्थी, रामचारी सिंह 'दिनकर', भगवतीशरण उपाध्याय, प्रभाकर माचवे, अमृतराय, ठाकुर प्रसाद सिंह, श्रीलाल शुक्ल, विद्यानिवास मिश्र, धर्मवीर भारती, डॉ. विवेकी राय, रघुवीर सहाय, कुबेरनाथ राय, रमेश चन्द्र शाह, डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, महेन्द्रनाथ पाण्डेय, राम अवध शास्त्री, श्यामसुंदर दुबे, श्रीराम परिहार, उमेश प्रसाद सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें से मेरे दृष्टिकोण में विवेकी राय वरिष्ठ निबन्धकार की कोटी में हैं जो पहले से लिखते आ रहे हैं।

कुंजी शब्द :- निबंध, ग्राम जीवन, समाजिकता, मूल्य बोध, हड़पनीति, मनुष्यहीनता आदि।

संशोधन पद्धति :- वर्णात्मक और विश्लेषण संशोधन पद्धति।

संशोधन के उद्देश्य :-

१) डॉ. विवेकी राय का परिचय देखना।
२) डॉ. विवेकी राय के निबंधों का परिचय देना।
३) डॉ. विवेकी राय के नबंधों में व्यक्त ग्राम संबंधित विचारों को देखना।
४) डॉ. विवेकी राय के निबंधों में सामाजिक विचारों को देखना।
५) डॉ. विवेकी राय के निबंधों की भाषा को देखना।

प्रस्तावना :-

निबंध प्रमुख रूप से मस्तिष्क की उपज है। इसलिए उसमें वैचारिकता प्रमुख तत्व है। निबंधकार विविध विषयों को अपनी वैचारिक भूमिपर कलम से पुधित, पल्लवित करता है। डॉ. विवेकी राय हिन्दी साहित्य के सुप्रसिध्द और प्रतिष्ठित कलाकार हैं। स्वातंत्र्योत्तर युग के कलम के सिपाही हैं। आज, ज्ञानोदय, कांदबिनी, धर्मयुग आदि पत्रिकाओं में लिखने के लिए शुरुआत किया और साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया। विवेकी राय साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करते ही समीक्षकों की भीड़ उमड़ पड़ी। वे गाजीपुर और बलिया के अंचलों की मिट्टी तथा धूल को फाँकते हुए किताबों में किसानों की समस्या, गाँव की, गाँव की जनता की कई समस्याओं को निचोड़ कर रखा। लेकिन इनके साहित्य को पढ़ते वक्त सिर्फ गाजीपुर और बलिया नही सारा हिन्दुस्तान के गाँव का चित्र या तस्वीर सामने आती है। विवेकी राय के निबंध, विचार, भाव, कल्पना, भाषा और सौन्दर्य का समन्वित परिणाम है। हिन्दी साहित्य में जिन निबंधकारों ने

लोकजीवन और लोकसंस्कृति का रचनात्मक निर्माण करते हुए अपने निबंधां के विचार और अभिव्यक्ति को प्रखर तथा ललित बनाया है, उनमें विवेकी राय प्रमुख हैं। उनका निबंध लेखन एक दीर्घ यात्रा रही है और यह सृजन यज्ञ मरते दम तक जारी था। उनके तेरह निबंध-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।हिंदी के मूर्धन्य आलोचक पं. रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि- "गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।"-१

भाषा कीं पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही अधिक संभव होता है। डॉ. गंगा प्रसाद गुप्ताजी का कथन "निबंध गद्य की वह छोटी एवं असपूर्ण रचना है जिसमें लेखक अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, अनुभूतियों और विचारों का अंकन, प्रत्यक्ष एवं निष्पक्ष रूप से सरल शैली में स्वतंत्रता से करता है।" २

स्वयं डॉ. विवेकी राय के अनुसार- "सांस्कृतिक दृष्टि संपन्न गंभीर विचार - चिन्तन-केंद्रीयता के साथ ललित निबंध में कवित्वमयता, कल्पना की उड़ान, रमणीयता, लेखकीय व्यक्तित्व की प्रति छाया, उसके 'मैं' का गहरा स्पर्श मनोविनोदात्मक छुअन और हल्की-फुलकी इतिवृत्तात्मक शुरुआत अथवा किस्से कहानी जैसी उड़ान और मुद्रा विद्यमान होती है... इसलिए बुध्दिवाद की इस संत्रास-शती में यह विचा बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।"-३

डॉ. विवेकी राय के निबंध : एक विवेचन :-

१) फिर बैतलवा डाल पर :- यह २०००में प्रकशित हुआ है। इस में २३ ललित निबंध हैं। चतुरी चाचा से मुलाकात, कवि सम्मेलन में, दूखन, सुर्तीकाण्ड, भाषण का असर, सोने की लूट, एक हजार की थैली, सभापति, मास्टर और नेता, चौबेजी का चमत्कार, परिभाषा का चक्कर, बड़ा साहब, रामबाबू बी. डी. ओ. से मिले, नयी कथा, मुखिया साहब, गरदन का दर्द, अफीम की बत्ती, गाँधीजी और कालीमाई, प्रेत-लीला, चूहे, अंग्रेजी और घूस, फिर बैतलवा डाल पर, 'बम' का सहारा, रात की बात, निशानी अँगूठा जिंदाबाद आदि ललित निबंध हैं। प्रस्तुत ललित निबंध संग्रह का नामकरण राजा विक्रमादित्य और बैताल की कथा के आधार पर लिखा गया हैं। डॉ. जितेंद्रनाथ पाठक इसकी भूमिका में लिखते हैं- "इन कथाओं में ग्रामजीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिपात है।"४ आलोच्च ललित निबंध प्रायः ही कथाएँ हैं, लेकिन ये ऐसी कथाएँ हैं जो थोडे व्यापक अर्थों में कथ्य की अनेक भूमियों के साथ-साथ कथन-शैली की अनेक विधाओं में संक्रमण करती दिखलाई पड़ती हैं। प्रायः इस ललित निबंध संग्रह की सभी रचनाएँ किसी-न-किसी व्यंग्य और विनोदय-चेष्टा से गर्मित है। यह व्यंग्य और विनोदय-चेष्टा प्रत्यक्षतया किसी अन्य के ऊपर प्रहार करके नहीं स्फुट होती बल्कि कथाकार अपने को ही समसामयिक व्यक्तियों, संस्थाओं और स्थितियों में इस प्रकार विनियुक्त करता है कि उपहास का केंद्र वह स्वयं बन जाता है अर्थात वह भोक्ता रूप में उपस्थित होता है निरपेक्ष दृष्टा के रूप में नहीं। कुछ निबंधों का संक्षेप में परिचय दिया है। 'चतुरी चाचा से मुलाकात' इस निबंध में चतुरी चाचा और मास्टर राय के बीच संवाद हैं जो उपहासात्मक है, हास्यास्पद भी हैं। देश के बारे में अध्यापक के बारें में चर्चा की गई है। 'कवि सम्मेलन' में इस निबंध में कवि सम्मेलन की चर्चा की गई है। 'दूखन इस ललित निबंध में दूखन भाई के चरित्र का चित्रण हैं। 'सुर्तीकाण्ड' इस ललित निबंध में दुर्व्यसन करनेवाले पर करारा व्यंग्य किया है। सुर्ती लोग छिपा छिपाकर खाते हैं। सुर्ती मास्टर की प्रेयसी की तरह है। फिर बैतलवा डाल पर इसमें राम भरोसे के व्यक्तित्व को चित्रित किया हैं जो सबका भला चाहनेवाला व्यक्ति है। इस निबंध में वधू के पिता की व्यथा चित्रित की गई है। 'बम का सहारा' इस निबंध में कॉपी करनेवाले छात्रों के लिए इतिहास के समय संवत तथा तिथियाँ याद करना बहुत कठिन हो जाता है तब कॉपी करके पास होना था पर पकड़े जाने से उसे परीक्षा फल बन की तरह गोल ही मिला है। 'रात की बात' इस निबंध में कुछ बातें लिखी नहीं जाती हैं जैसे गरीबी की, रात की बातें, गम की बातें क्योंकि इसमें अनजाने सवाल खड़े हो जाते हैं। निशानी अँगूठा जिन्दाबाद' इस निबंध में चुनाव का चित्रण हैं, प्रचार का दौर एवं चुनाव की तैयारी तथा चुनाव का चिह्न अंगूठा आदि बाते इसमें हैं। संक्षेप में विवेच्य निबंध संग्रह के निबन्धों में ग्रामीण मानसिकता की व्यंग्ययतात्मक शैली में अभिव्यक्ति हुई है।

२) जुलूस रुका है :- डॉ. विवेकी राय का १९७७ में प्रकाशित हुआ है। यह रचना हिन्दी साहित्य का पहला महत्वपूर्ण रिपोर्ताज-संकलन एक बहुत बड़े अभाव की कलात्मक पूर्ति, सर्वथा मौलिक और अनिवार्य पठनीयभी है। इसमें स्वातंत्र्योत्तर परिवर्तन, मूल्य के टूटते, नये आर्थिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक चेतना की झकझोरा है। इस ललित निबंध में

अनेक छोटे-छोटे निबंध हैं। जैसे सावधान! गाँवों में शहर आ पहुँचा, नदी और जीवन, आसमान में जलबंदी, अथ कथा ग्रामांचलों की, संतो धोखा कासों कहिये? नालायक, बाढ़ ! बाढ़ !! बाढ़ !!!, हमारे गाँवों के साहित्यिक नौरतन, प्रलय का पानी, गाँव की गोरी, कौन अंघा? कौन लाचार, एक ग्रामायण: सात कांड, क्या बसंत आ गया? लोटे की चोरी, पाँच पानी खेत में, पचास पानी खलिहान में, लली फिर आइयो काटन खेती, चौमुख बाबा का गाँव, कठौड़ा ग्राम की नगउरी, देशी सवाल की सलीव पर, पदयात्रा, आदि।उनके निबंधों में ग्राम्य जीवन का सौन्दर्य, शहरीकरण के प्रभाव से विरूप होता ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण जीवन का प्रकृतिजन्य समस्याएँ, वहाँ शिक्षा और विकास की आड़ में भ्रष्टाचार एव घिनौनी राजनीति आदि अनेकमुखी समस्याओं का यथारूप चित्रण किया गया है। इस अलोच्य ललित निबंध संग्रह में मानवीय मूल्यों का ह्रास और बदलता हुआ ग्राम्य एवं नगर जीवन का चित्रण किया है। वर्तमान युग में वैज्ञानिक चिंतन और विकास के कारण मनुष्य की तार्किक एवं बौद्धिक चेतना का विकास हुआ है, जिससे उसकी भाव-संवेदना का ह्मास हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव से मूल्य टूटन हो रहे हैं। समाज में विभिन्न विसंगतियों एवं समस्याओं को उद्‌घाटित किया है। इसके संबंध में विवेकी राय लिखते हैं- "बेचारा गाँव! वह नगर बन न सका और न ही गाँव रह सका। नगर का हर धक्का कुछ न कुछ तोड़ जाता है। लड़ाई भोले भाव और चौकन्नेपन की है। गाँव एक राग है। एक कल्पना है, एक विस्तार है और सहजता है। भरसक ये चीजें खिसकने नहीं दी जा रही हैं। हर स्तर पर लड़ाई। छोटी-छोटी चीजों में टकराहट। सिलवर के गिलास का शर्बत और कप-प्लेट की चाय तथा चौपाई और फिल्मी गीत तक पैंतरे पर। एक केस है हुक्का बनाय बीड़ी-सिगारेट का।"-५ निबंधकार ने गाँव की पीड़ा को बहुत मार्मिकता से व्यक्त किया है। 'बाढ़ ! बाढ़!! बाढ़ !!!', इस ललित निबंध के द्वारा आधुनिक जीवन शैली को चित्रित किया है। आज बाढ़ग्रस्त गाँव को देखकर राजनेता लोग हवाई सफर कर, रहे हैं। मगर लोग बिचारे पानी में मर रहे हैं, कई लोग पानी के साथ बह गये हैं। बाढ़ की समस्या बहुत बड़ी समस्या बनी है। १९६२ में बहुत बड़ी बाढ़ आयी थी। मौत का अज्ञात भय छाया था। गाँव में भगदड़ मची थी।

३) गवई गन्ध गुलाब :- १९८० में लिखित डॉ. विवेकी राय का यह ललित निबंध प्रसिद्ध हैं। इसमें २२ निबंध है। बैंगलेवाली माँजी, खेदू, मौलवी साहब, चौधरी साहब, छिपे रूस्तम, हिन्द साहब, फूआ, पागल, आजी, ऊर्ध्वरेता, तहसीलदारनामा, बउरहिया, शिखण्डी मास्टर, बड़े बाबू, शहर का उपहार, लोटन का लटका, गँवई गन्ध गुलाब, रंग होली का. सोलंकीजी, यदि मैं राजा होता. शिवप्रसाद सिंह, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी आदि। इस संकलन के कुछ निबंध ज्ञानोदय और धर्मयुग' पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। इस में गाँव, सभ्यता, संस्कृति का चित्रण है। गँवई गाँव की सांस्कृतिक माटी से फूटती इस गुलाब गन्ध का चित्रण भी है। निसन्देह गन्ध का सारा प्रभाव निबंध में आये चरित्रों में दिखाई देता है। 'गंवई गन्ध गुलाब' में रेखाचित्रों और दो भेटवार्ताओं का संकलन है। प्रस्तुत निबंध संग्रह में ग्राम जीवन में सहृदय गवई मिले जिनके व्यक्तित्व में गुलाब-सी गन्ध है। यह वे पात्र हैं जो भौतिक दृष्टि से संपन्न नहीं हैं, लेकिन उनके पास गाँव का सहज, सरल, सादगी एव सुसंस्कृत जीवन है। बैंगलेवाली मॉजी में माँ के वात्सल्य मूर्ति का ममता का चित्रण है। रामायण की कैकयी जैसी नहीं है। वात्सल्य प्रेम एवं स्नेह की मूर्ति माँ बँगलेवाली है। 'खेदू यहरेखाचित्रात्मक निबंध है। खेदू निष्काम कर्मयोगी है। लगता है जैसे अस्सीवर्ष का बालक है। मजबूत काठी का पूरा प्रौढ निच्छल, निर्दोषी सच्चा यह खेद् का चरित्र है। 'मौलवी साहब' यह एक आदर्श अध्यापक मोहसिन अली के व्यक्तित्व को उजागर करता है। छिपे रूस्तम में राम गाँव में सस्ते गल्ले की दुकान चलाता है। विश्वमंगल की भावना उनके दिल में दिखाई देती है। 'चौधरी साहब' का चौधरी एक दम सच्चे दिल का आदमी है। 'हिंद साहब' रेखाचित्र में खान के व्यक्तित्व का रोचक चित्रण है। जो खान वैद्य के रूप में सेवा करता है। 'फूआ में नारी पात्र मरछिया हैं जो गाँव में प्रसिद्ध है। गाँव की सहायता करती भी है तो कभी फटकारती भी है। 'पागल' इस निबंध में नरेंद्र के पश्चाताप का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण है। 'आजी' में साक्षात अन्नपूर्णा के रूप में आजी का चित्रण किया है। 'बहुरिया में फुलबसिया के जीवन संघर्ष का चित्रण है। 'उर्ध्वरेता में श्रद्धा और भक्ति का चित्रण है। शिखण्डी मास्टर में अनुशासन प्रिय अध्यापक का चित्रण है। 'लोटन का

लटका में मास्टर लोटन प्रसाद सिंह का व्यक्तित्व दिखाई देता है। इस प्रकार प्रस्तुत ललित निबंध एवं रेखाचित्र में विवेकी राय ने ग्रामीण जनजीवन के साथ ग्रामीण पात्रों का रेखांकन किया है।

४) मनबोध मास्टर की डायरी :- १९८४ में लिखा गया किंतु १९८६ में प्रकाशित हुआ है। इस निबंध संकलन में लगभग २३ निबंध हैं। इसमें खुद लेखक के अध्यापकीय जीवन के अनुभव का संचलन दिखाई देता है। प्रस्तुत संग्रह का प्रथम निबंध 'आज का कमरा गाता है इस निबंध में प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में अलग-अलग विचार व्यक्त किये गये हैं। 'चोर' इस निबंध में शिक्षा की समूची दुर्दशाग्रस्त स्थिति का चित्रण हैं। 'मेरा प्रोग्राम में गाजीपुर के बिल भुनाने के कार्यक्रम की बात को चित्रित किया है। 'प्रयोगवादी शिक्षा में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्यय किया है। 'अवकाश के दिन निबंध में अवकाश प्राप्त शिक्षक का यथार्थ चित्रण निबंधकार ने किया है। 'अखबार और अध्यापक' इस निबंध में अखबार की स्थिति एवं अध्यापक की स्थिति एक जैसी हो गई है, कहकर व्यंग्यय किया है। 'अथक अकथ कथ इस निबंध में अध्यापक के समग्र जीवन का यथार्थ चित्रण है। 'तिरपन घंटे बाद इस निबंध में गाँव की राजनीतिका चित्रण है रास्ते खड्डों से भरे हैं। पाठशाला गाँव से दूर है यह समस्या है। 'नरेंद्र क्या करें? इस निबंध में बेरोजगारी का चित्रण है। 'मास्टर कमल' इस निबंध में अध्यापक के जीवन की त्रासदीको चित्रित किया गया है। 'सत्यनारायण की कथा में राजा तुंगध्वज के माध्य में आज की राजनीतिक स्थिति पर व्यंग्य किया है। 'भारतीय वाङ्मय' मासिक पत्रिका में प्रस्तुत संग्रह के सन्दर्भ में निशंक 'वीणा इन्दौर ने कहा है कि- "इस कृति और कृतिकार की प्रशंसा में अधिक कुछ कहना गाँव के ताजा रसीले गुड़ पर शहद का लेप चढ़ाना है।"-६

इस प्रकार इस निबंध संग्रह के बारे में डॉ. त्रिभुवननाथ वेणु कहते हैं- "मनबोध मास्टर की डायरी जो 'आज' (वाराणसी) में सन् १९५७ से १९६१ तक चर्चित हुई थी, जो डॉ. विवेकी राय के अध्यापक जीवन की त्रासदियों का प्रामाणिक दस्तावेज है। यह रचनाएँ समकालीन अध्यापक जीवन का समग्र रूप में समूची आड़ी-तिरछी रेखाओं और मुहावरों के साथ, जीवंत चित्र खड़ा करती है।"-७

५) नया गांवनामा :- यह १९८४ में लिखित डॉ. विवेकी राय का ललित निबंध है। इस में ग्रामीण चित्रण किया गया है। ग्राम जीवन के समर्पित कथाकार और ललित निबंध लेखक विवेकी राय ने इस संकलन में गाँवों की बदलती नयी तसवीरों के बीच से गुजरता है। अत्यंत ही उत्फुल्ल मुद्रा में, हँसी-खुशी के साथ लेखक आपको पीड़ा के दुर्वह भार से टूटते गाँवों के बीच से गुजरते हुए चित्रण किया है। इस संग्रह के अंतर्गत ३१ निबंध हैं। गाँव का भविष्य निबंध में गाँव का कोई भविष्य नहीं है, नहीं होना चाहिए, अब नगरों का भविष्य है इस पर लेखन किया है। 'धोती' निबंध में धोती कुर्ता गाँव की पहचान है। 'अपने हाथ का जगन्नाथ इस निबंध में बाढ़ का चित्रण किया है। बेजुबान होने का दर्द इस निबंध में जनपद के अधिकारी साहब का चित्रण है। 'छोटे के दिन खोटे इस निबंध में आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त किया गया है। 'झींगुर चढ़ा जहाज' इस निबंध में आज के आदर्शहीन राजनेता पर करारा व्यंग्य किया है। भ्रष्ट राजनीतिका पर्दाफाश किया है। 'बेहतर हैं आसमान ही तका जाये इस निबंध में ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। 'एक बार फिर वह हार गया इस निबंध में निर्वाचन प्रक्रिया की कमियों को उजागर किया गया है। लोकतंत्र की भ्रष्ट शिष्टाचार पर व्यंग्य किया है। 'क्या हुए वे क्रीड़ा- कार्यक्रम?' इस निबंध में वर्तमान शिक्षा नीति का चित्रण है। जगे जीवन के बीच सोता कुत्ता इस निबंध में गाँव के निठल्ले लोग कुत्ते की तरह निश्चित सोये हुए हैं। इसका चित्रण है। 'साँडा के बूढ़े इस निबंध में गाँव में आये नये परिवर्तन का चित्रण है। 'टूटते घर : चिकटते परिवार इस निबंध में संयुक्त परिवार का चित्रण है। 'अर्धांग चिंता' इस निबंध में भारतीय नारी की दशा एवं नारी समस्या का चित्रण है। इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि 'नया गाँवनामा' ललितनिबंध संग्रह में ग्रामीण परिवर्तनवादी विचारों को लेकर ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। कृषि विषयक तांत्रिक साधन, तथा शिक्षा पर अश्रित कृषि का चित्रण जल-योजना अधिकारी, नेता लोग का राजनीतिक षड्यंत्र आदि का यथार्थ चित्रण इस निबंध संग्रह में दिखाई देता है। २००२ में पुनः इस निबंध संग्रह का नाम नयी पुनरावृत्ती में बदल दिया है- 'जैसे- 'वन तुलसी की गंध ।

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Feb'26
Issue–II(II), Volume–XIV
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2602S02V14P003

६) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें :- १९८४ में लिखित डॉ. विवेकी राय मेरी श्रेष्ठ व्यंग्यय रचनायें प्रकाशित हुई हैं। इसमें लगभग २५ व्यंग्ययात्मक निबंधों का संग्रह है। 'अथ लोढ़ा प्रकरण इस व्यंग्य निबंध में विवाह की समस्या का चित्रण है। कन्या विवाह में तो बहुत ही फिजूलखर्ची बाब होती है। यहाँ स्पष्ट किया है। मुकदमेबाजी इस व्यंग्यय निबंध में भारत के मुकदमेबाजी पर व्यंग्यय किया है। मुकदमा बढ़ रहे हैं कहकर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं। गाँवजीवी सघ इस व्यंग्यय निबंध में चुनाव को लेकर राजनेता के बड़े-बड़े अश्वासनों पर व्यंग्यय किया है। 'वह उजली फागुनी रात इस निबंध में अन्धविश्वास का चित्रण है। मूल्यांकन इस निबंध में उत्तर पुस्तिका की मूल्यांकन पध्दति पर व्यंग्यय किया है। गाँव की कली, खिली बंबई की गलीं' इस निबंध में गाँव के युवक शहर में जाने के पश्चात उसमें नव-नवीन परिवर्तन किस प्रकार होते हैं इसका चित्रण है। 'तीन साहब' इस निबंध में साहब एवं अधिकारी वृत्ति पर व्यंग्यय किया है। 'धन्यवाद कवियों!' में कवि सम्मेलन पर व्यंग्यय किया है। 'कीचड' इस निबंध में गाँव की राजनीतिक गंदगी का चित्रण है। 'प्रचार' इस निबंध में चुनावों का चित्रण है। 'नालायक' इस निबंध में नौकरी के लिए नियुक्त करनेवाले भ्रष्ट अधिकारी पर व्यंग्यय किया। तिलकोत्सव इस निबंध में तिलक चढ़ाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्यय किया है। 'एक सड़क का आधुनिकता बोध इस निबंध में देश की वर्तमान राजनीति पर व्यंग्यय किया है। यह किसकी लीला?' इस निबंध में बैलगाड़ी की उपयोगिता बताई है। इस प्रकार इस व्यंग्यय निबंध संग्रह में गाँव के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक पक्ष को लेकर व्यंग्य रूप में लेखन किया है।

७) आम रास्ता नहीं हैं :- डॉ. विवेकी राय का निबंध संग्रह का१९८८ में प्रकाशित हुआ है। इस निबंध में कुल ४४ निबंध हैं। इसमें ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण समस्याओं. लोक व्यवहार, लोक संस्कृति का चित्र है। 'उठे हुए प्लेटफार्म पर ढहे हुए गाँव' इस निबंध में भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का महत्व किस प्रकार है इसका चित्रण है। 'हमनी के धन इहे गंगाजी के जल बा' इस निबंध में गंगा नदी का महत्व का चित्रण किया है।

८) जगत तपोवन सो कियो:- यह १९९५ में लिखा हुआ डॉ. विवेकी राय का प्रसिद्ध निबंध संग्रह है। इसमें कुल २८ निबंध हैं। सभी निबंधों में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। इसके संबंध में रामचंद्र तिवारी कहते हैं- "विवेकी राय मूलतः किसान चेतना के रचनाकार हैं। उनकी मूल चिन्ता ग्रामीण जीवन की सहज रसधारा के छिजनें से उत्पन्न होनेवाली मूलभूत विकृतियों को लेकर है.... प्रस्तुत निबंध संग्रह जगत तपोवन सो कियो भी विवेकी राय की मूल चिन्ता का ही मूर्त रुप है। इसमें संग्रहित निबंधों की रचना भूमि के केंद्र में गाँव ही हैं।"-८ 'कोपल-कोपल त्रऋतुपति पाती' इस निबंध में वसंत ऋतु का चित्रण है। 'जगत तपोवन सो कियों इस निबंध में ग्रीष्म में गाँव की भयंकर स्थितियों को चित्रित किया है।

९) जीवन अज्ञात का गणित है :- २००३ में प्रकाशित डॉ. विवेकी राय का यह दसवों निबंध संग्रह प्रसिद्ध है। इसमें ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। प्रस्तुत निबंध संग्रह में २० निबंधों का चित्रण है। लोकजीवन एवं संघर्ष को ध्यानाकर्षक जुलूस के साथ बदलते सामाजिक जीवन के बीच से एक एससिक्त वैचारिक यात्रा की अनुभूत्ति पन्ने पन्ने में दिखाई देती है। आज के जिंदगी के परिवेश में जीने के लिए विचारों के साथ-साथ कोई-कोई रस होना जरूरी है। इसी रस के साथ ही हमारा जीवन सुसंस्कृत बनता है। परन्तु आधुनिक परिवेश में जो रस हैं। उसमें मूल्यां का ह्रास, टूटन, घुटन, विविध विसंगतियों, भ्रष्ट राजनीति का होना आदि का लेखक ने यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत संग्रह के 'बूढ़ों का बढ़कर स्वागत है', 'जेठ की दुपहरिया', बिहान-फूल चरणो में. छोटी लाइन की खोटी डाइन, ग्रामीण मार्ग मनोविज्ञान', 'मौत का अंतर, 'मकान के लिए कान क्यो कटाएँ?', 'खेत-खेत में वृदावन', 'चतुरी चाचा से प्रश्नोत्तर', 'अविश्वास बनाम विश्वास', 'सरकारी आदमी', 'बड़े प्रेम से मिलना', 'घडियाल दर्शन', 'ग्रामीण भारत और स्वाध्याय की चुनौती, 'जीवन अज्ञात का गणित है, 'कुछ कहते नहीं बन रहा है', 'हिंदी समसामयिक लेखन और ग्राम जीवन की चुनौतियों', 'एक गाँव, जो शहर को पचाए हुए है आदि।

१०) चली फगुनहट बौरे आम:- यह निबंध संग्रह २००४ में प्रकाशित हुआ है। इसमें लोकजीवन और संस्कृति का चित्रण किया है। जिसमें लगभग ३७ निबंधों का संकलन है। इस संग्रह की प्रमुख विशेषता यह है कि डॉ. विवेकी राय ने

अपने सभी ललित निबंधों में से प्रमुख निबंधों को संकलित किया है। जैसे- नदी और जीवन, चली फगुनहट बौरे आम, फुआ. खेदू, संग्राम बनाम ग्राम, बउरहिया, गाँव का सुख। गाँव का दुःख!, सांझ के बूढ़े, चतुरी चाचा से मुलाकात आदि। प्रस्तुत निबंध संग्रह में गाँव के बदलते स्वरूप और इसका गाँव के जन जीवन पर पड़ते प्रभाव का चित्रण है। गाँवों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, प्रकृति परिवेश आदि का चित्रण भी है। स्वयं विवेकी राय अपने इस निबंध संग्रह के प्रति विचार व्यक्त करते हैं- "यह कहना कि ललित का रूप एक ही है. सृजन के स्तर पर मुझे ऐसा नहीं लगता है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि निबंध ही मात्र ललित नहीं होते, वरन् साहित्य की अन्य विधाओं में भी इनका कोई न कोई रूप प्राप्त होता है।"-९ इस में प्रकृति का चित्रण किया है- बसंत ऋतुराज, फल्गुन मास, पौश, माघ में हुए प्रकृति के विभिन्न बदलावों का चित्रण है। 'रामचरितमानस में शक्ति-भक्ति का संगम, सूर का कथा नाट्य शिल्प, 'राष्ट्रीय आकांक्षा और कवि निराला तथा बिहारी का सुआ और गुप्त जी का साकेत आदि निबंध में भक्ति एवं काव्य प्रधान निबंधों को सम्मिलित किया है। प्रस्तुत रचना के सन्दर्भ में रेणु गुप्ता का कथन है- "प्रत्येक लेख में लेखाक का व्यचित हृदय जीवन की शांति और चैन की खोज में संलग्न दृष्टिगत होता है। उन्हें लगता है कि आज समाज में फैली अराजकता, अव्यवस्था, अनिश्चितता संकट-बोध के मूल में व्यक्ति की निवृत्ति, प्रगति, अध्यात्म और आर्द्रता का खो जाना है। रामत्व ऐसा लगता है कि डूब गया है और रावणतत्व उस पर पूरी तरह से हावी हो गया है।"- १०

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि डॉ. विवेकी राय के निबंध संग्रह में ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्रण निबंधों के माध्यम से किया है। समग्रता से विवेकी राय के निबंधों के सन्दर्भ में डॉ. राजेश भामरे जी कहते हैं कि- "डॉ. विवेकी राय की निबन्ध-यात्रा यही सिद्ध करती है कि उन्होंने अपने निबन्धों में विविध विषयों का परामर्श लेते हुए समसामायिक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, लोकजीवन, लोकसंस्कृति आदि का सूक्ष्म दृष्टि से चित्रण किया है। इसी कारण उनके निबन्ध विविध आयामी हैं। इन आयामों का विस्तृत अध्ययन परवर्ती अध्यायों में द्रष्टव्य है।"११

सन्दर्भ ग्रंथ:-

१) रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. ५०५
२) गंगा प्रसाद गुप्त - 'हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार, पृ.१२
३) विवेकी राय -जगत तपोवन सो कियो, (हिन्दी ललित निबन्ध)पृ. ११०
४) विवेकी राय - फिर बैतलवा डाल पर, भारतीय ज्ञानपीठ, भूमिका पृ.१
५) विवेकी राय - 'जुलूस रूका है, (निबंध-सावधान गाँवों में शहर आ पहुँचा है) पृ. ०२
६) भारतीय वाङ्मय मासिक पत्रिका, सं. परागकुमार मोदी, अंक ११ वर्ष-७. नवम्बर २००६, पृ. १४
७) सत्यकाम - 'माटी की महक, (लेख- 'मनबोध मास्टर की डायरी- त्रिभुननाथ वेणु) अभिरुचि प्रकाशन. पृ. १८९
८) विवेकी राय - जगत तपोवन सो कियो 'प्राक्कथन' से पृ. ०६
९) अनुपमा तिवारी - विवेकी राय कृत 'चली फगुनहट बौरे आम लोकतत्व' क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स पृ. ४७-४८
१०) 'समीक्षा' त्रैमासिक पत्रिका, सं. गोपाल राय हरदयाल, अंक-१, वर्ष-३८, अप्रैल-जून, २००५ ई., पृ. ३६
११) राजेश भामरे - 'निबन्धकार विवेकी राय', पृ.९५